सेंट फ्रांसिस

एम्मा फिशेल

चित्र : निक वार्ड

सेंट फ्रांसिस

आठ सौ साल से पहले इटली में असीसी नामक स्थान पर एक बच्चे का जन्म हुआ था.

"मैं उसे जॉन बुलाऊंगी," उसकी मां ने कहा. "उसके पिता फ्रांस में हैं लेकिन वो मान जाएंगे!"

लेकिन पिताजी नहीं माने.

फ्रांसिस एक संत पैदा नहीं हुए थे. मृत्यु के बाद ही चर्च लोगों को, संत बनाता है. उसके लिए उन्होंने कुछ विशेष अच्छे और पवित्र काम किए होने चाहिए.

लेकिन फ्रांसिस विशेष रूप से अच्छा और पवित्र बच्चा भी नहीं था.

हालांकि उसने भगवान के बारे में काफी कुछ सीखा था.

उन दिनों चर्च बहुत समृद्ध और शक्तिशाली होता था.

लोग दुनिया के बारे में बहुत कम समझते थे और वे मदद के लिए चर्च की ओर देखते थे.

उस समय छोटे गाँवों में भी एक चर्च होता था, जबकि कस्बों और शहरों में गिरिजाघर, महलों जितने बड़े और भव्य होते थे.

मेरे लिए प्रार्थना करें.

असीसी एक बड़ा शहर था. वहां पर उत्साहित करने वाले बहुत चीज़ें होती थीं और फ्रांसिस हमेशा उनमें भाग लेता था.

उनके पिता कपड़े के व्यापारी थे. "तुम भी बड़े होकर वही करना," उन्होंने फ्रांसिस से कहा. "बहुत से लड़के अपने पिता का ही धंधा करते हैं."

लेकिन फ्रांसिस ने कपड़ा व्यापारी बनने की योजना नहीं बनाई. वास्तव में, उसने अपने भविष्य के बारे में अभी कुछ भी नहीं सोचा था.

उस समय शहर गंदे, बदबूदार स्थान होते थे. शहरों की सड़कों पर भिखारी और जेबकतरे घूमते थे.

विभिन्न शहरों के बीच अक्सर भयंकर लड़ाई चलती थी.

जब फ्रांसिस बीस वर्ष के थे तो उन्होंने पेरुगिया नामक शहर के खिलाफ असीसी के लिए लड़ाई लड़ी. उन्हें बंदी बना लिया गया और पूरे एक साल तक कैद में रखा गया.

Fol de rol.

Fol de rol.

फ्रांसिस एक बार फिर से लड़ने के लिए निकल पड़े. फिर कुछ ऐसा हुआ जिसने उनकी पूरी जिंदगी ही बदल डाली.

स्पोलेटो नामक स्थान पर एक दिव्य आवाज ने उनसे कहा, "घर जाओ, और सेवा करने के लिए आगे के निर्देशों की प्रतीक्षा करो."

अंत में फ्रांसिस छूटे लेकिन घर वापस आकर वो खतरनाक रूप से बीमार पड़ गए. उन्हें ठीक होने में दो साल लग गए.

फ्रांसिस ने अपने चारों ओर देखना शुरू किया. "इतने सारे गरीब और जरूरतमंद लोग!" उन्होंने कहा. "मुझे उनकी मदद करनी चाहिए."

एक दिन घुड़सवारी के दौरान उसकी मुलाकात एक कोढ़ी से हुई. कुष्ठरोग की भयानक बीमारी से मरीज़ का शरीर घावों से ढक जाता था. तब हरेक को कुष्ठरोग पकड़ने का डर होता था.

फ्रांसिस के दिल में भी डर था. लेकिन फिर भी वो नीचे झुके, उन्होंने कोढ़ी को पैसे दिए और उसका हाथ चूमा.

फ़्रांसिस ने अकेले में सोचने और प्रार्थना करने में बहुत समय बिताया. अब उन्हें पता था कि उन्हें अपने प्रभु यीशु की सेवा सर्वोत्तम तरीके से करनी है.

प्रभु, मुझे क्या करना है वो दिखाओ.

"लेकिन प्रभु की सेवा का सबसे अच्छा तरीका क्या है?" उन्होंने खुद से पूछा.

"पादरियों के पास बड़े और आलीशान चर्च होते हैं लेकिन मुझे इतने ऐश में नहीं रहना चाहिए जबकि यीशु इतनी सादगी में रहे थे!"

"पादरियों के पास प्रार्थना करने का समय, अध्ययन की जगह होती है. उनके पास हर चीज के लिए एक नियम है. पर भगवान की सेवा करने के लिए वो मेरा रास्ता नहीं होगा!"

जब फ्रांसिस लगभग पच्चीस वर्ष के थे, तो एक बार फिर उन्हें वो दिव्य आवाज सुनाई दी. इस बार वो सेंट डेमियन के चर्च में थी.

"मेरे घर की मरम्मत करो," उस आवाज़ ने कहा.

"लेकिन मरम्मत के लिए पैसे की जरूरत होगी," फ्रांसिस ने कहा.

फिर बिना पूछे फ्रांसिस ने अपने पिता की दुकान से एक घोड़े पर महंगे कपड़े के थान लादे. फिर पास के एक शहर में जाकर उन्होंने वो सब कपड़ा बेच दिया. बाद में उन्होंने घोड़ा भी बेच दिया.

फ्रांसिस पैसा पाकर खुश हुए लेकिन उनके पिता बहुत नाराज़ हुए. "मुझे तुरंत मेरे सारे पैसे वापस दो," उन्होंने गुस्से में डांटा.

"पैसा, भगवान और गरीबों के लिए होता है," फ्रांसिस ने कहा.

यहां तक कि असीसी के मुख्य पादरी ने भी फ्रांसिस से पैसे वापस करने को कहा.

"मैं सब पैसे वापस दे दूंगा," फ्रांसिस ने कहा. "ये कपड़े भी तो मेरे पिता के ही हैं!"

फिर फ्रांसिस ने एक नौकर का चोगा पहना और उसके सामने एक क्रॉस बनाया. "मेरे एकमात्र पिता अब भगवान हैं," फ्रांसिस ने कहा. फिर वो वहां से चले गए.

इस तरह दो साल बीते. फ्रांसिस ने एक गरीब आदमी की ज़िंदगी जी. वो भोजन के लिए भीख मांगते थे और असीसी के आसपास की पहाड़ियों में घूमते थे.

कई लोगों ने उनकी खिल्ली उड़ाई. "तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है," उन्होंने कहा. "तुम बिल्कुल निकम्मे हो."

"मेरे पास वो सब कुछ है जो मुझे चाहिए," फ्रांसिस कहते. "और मैं वह सब हूं जो मैं बनना चाहता हूं."

फ्रांसिस, संट डेमियन में पुराने चर्च की मरम्मत करने में कामयाब रहे. फिर उन्होंने दूसरे, फिर तीसरे चर्च की मरम्मत की.

अब तक फ्रांसिस को अपने परिवार और घर को छोड़े तीन साल से अधिक का समय हो चुका था.
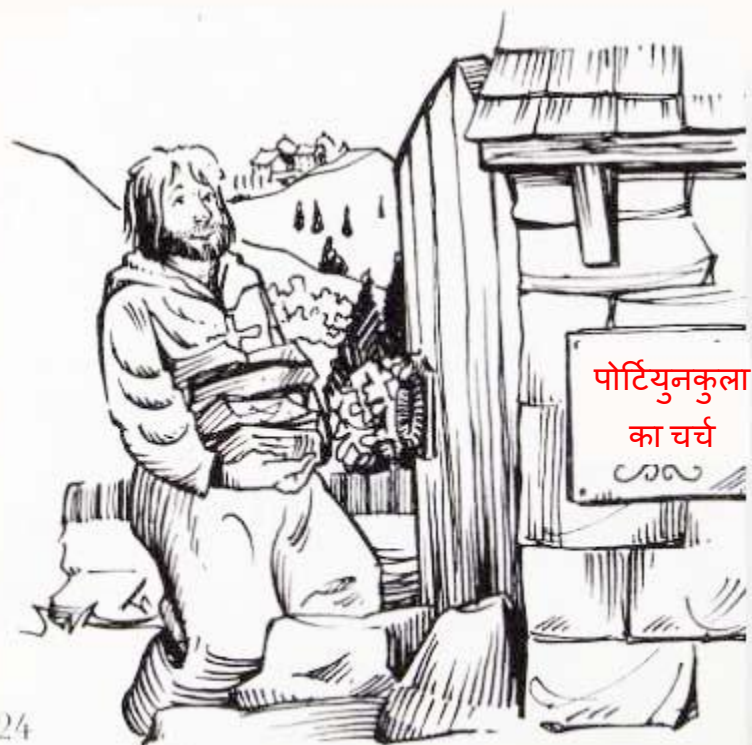
"मैं प्रभु के लिए ज़रूर इससे कुछ और ज़्यादा कर सकता हूं," फ्रांसिस ने सोचा. "पर क्या?"

"मैं अब अन्य लोगों को प्रभु का मार्ग सिखाऊंगा," फ्रांसिस ने कहा. "मैं एकदम सादगी से जियूंगा, बिल्कुल अपने ईश्वर की ही तरह."

इसलिए उनके पास जो कुछ बचा था वो भी उन्होंने दान कर दिया.

फ्रांसिस अब अट्ठाईस साल के थे. वो अलग-अलग शहरों में घूमने और प्रचार करने लगे. शुरू में उन्हें सुनने बहुत कम लोग ही आए, लेकिन फिर भीड़ उमड़ने लगी.

फ्रांसिस की शोहरत फैलने लगी.

बर्नार्ड दा क्विंटावल्ले - एक अमीर और महत्वपूर्ण व्यक्ति, ने अपना सब कुछ बेच दिया.

उसने सारा पैसा गरीबों में बांट दिया और फ्रांसिस से जुड़ गया. वो हमेशा खुश रहता है.

धीरे-धीरे फ्रांसिस के बारह शिष्य हो गए.

"हम बारह भिक्षु (फ्रायर्स) होंगे. हम यात्रा करेंगे और प्रचार करेंगे. हम ज़रूरतमंद लोगों की देखभाल करेंगे," फ्रांसिस ने कहा. "हमारा नाम फ्रायर्स माइनर होगा."

वे कैथोलिक चर्च के प्रमुख पोप से विनती करने के लिए रोम गए. वे चाहते थे पोप उनके भिक्षु-समुदाय को अपनी स्वीकृति दें.

अब बहुत से लोग फ्रांसिस से जुड़ रहे थे.

"किसी भी प्राणी को खुद से कम मत आंको," उन्होंने सभी से कहा. "क्योंकि हर चीज उसी भगवान ने रची है!"

"जानवर बिना किसी डर के फ्रांसिस के चारों ओर घूमते हैं!" उनके शिष्यों ने कहा. "जानवर जानते हैं कि फ्रांसिस कितने कोमल हृदय हैं."

फ्रांसिस ने प्रकृति की सभी प्यारी चीजों के बारे में एक कविता भी लिखी.

फ्रांसिस और उनके चेलों को फ्रांसिस्कन के नाम से जाना जाने लगा. जल्द ही कई देशों में फ्रांसिस्कन आए और दुनिया के सभी हिस्सों में फ्रांसिस्कन भिक्षु फैले.
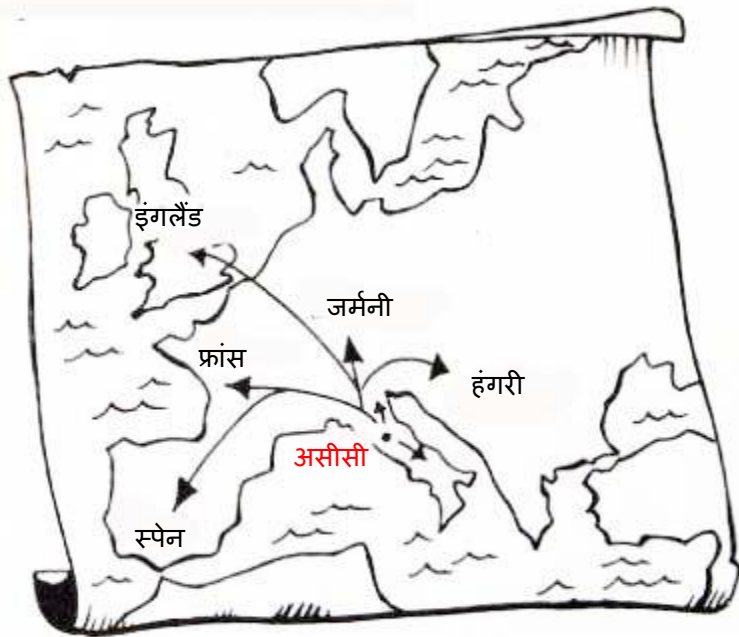
फ्रांसिस खुद मिस्र गए, हालांकि सभी ने उन्हें वहां न जाने की चेतावनी दी थी.

"तुम वहां पर मारे जाओगे," लोगों ने कहा.

"मिस्र में युद्ध चल रहा है और वे सार्केन्स ईसाइयों को मार डालते हैं!"

लेकिन फ्रांसिस ने कोई ध्यान नहीं दिया.

उसे जाने दो!

सुलतान, मुझे इंसानों नें नहीं बल्कि भगवान ने भेजा है!

सारासेन कैंप

वैसे कुछ फ़्रांसिसन भिक्षुयों के लिए फ़्रांसिस की बताई सादगी से जीना मुश्किल हो रहा था.

फ्रांसिस के समर्थक कहते, "वो हम से कुछ नहीं मांगते हैं."

"अभी फ्रांसिस यहाँ नहीं है," परिवर्तन चाहने वाले भिक्षुओं ने कहा. और फिर वे अपनी योजना बनाने लगे.

कम यात्रा

मांस और शराब!

प्रार्थना अधिक, उपदेश कम

ज़्यादा कपड़े

फ्रांसिस को इसके बारे में जानना चाहिए!

जब फ्रांसिस इटली वापिस लौटे तो जो कुछ उन्होंने देखा वो उन्हें पसंद नहीं आया. उनके पीछे एक फ्रांसिस्कन कॉन्वेंट बनाया गया था.

फ्रांसिस ने अपने सभी अनुयायियों को उनकी बात सुनने के लिए बुलाया.

"भव्य इमारतें और प्रार्थना के लिए एक निश्चित समय, फ्रांसिस्कन तरीका नहीं है," उन्होंने कहा.

"मैं फिर से दोहराता हूं. कुछ भी मॉल-मत्ता नहीं रखो. यात्रा करो. सरल और स्वतंत्र रूप से जियो. लोगों को प्यार करके और उनकी देखभाल करके अपने धर्म का प्रचार करो!"

फ्रांसिस अब बयालीस साल के थे और वो अब थक गए थे. "अब मेरा भगवान के पास जाने का समय आ गया है," उन्होंने कहा. "अब अन्य लोग मेरे भिक्षुओं की देखभाल कर सकते हैं."

फ्रांसिस ने कुछ नहीं खाया और प्रार्थना में अपना समय बिताया. "क्या मैंने ठीक-ठाक काम किया है, प्रभु?" उन्होंने कहा. "काश मैं यह जान पाता!"

तब उसके सामने मनुष्य और स्वर्गदूत दोनों प्रकट हुए. जैसे ही फ्रांसिस ने आश्चर्य से उस नज़ारे को देखा, उनके अपने शरीर पर चोट के निशान दिखाई देने लगे.

"ठीक वैसे ही चोट के निशान जैसे हमारे प्रभु ने सलीब पर सहे थे," भाई लियो ने कहा.
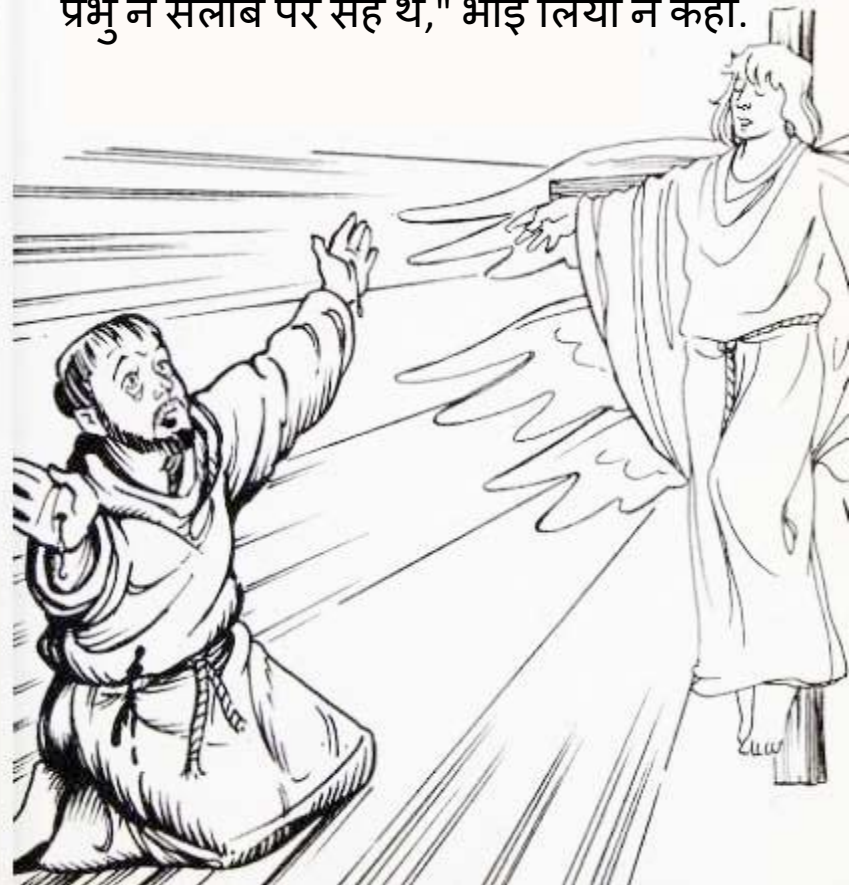
फ्रांसिस ने ईश्वर द्वारा दिए गए उन निशानों को कभी नहीं दिखाया.

अब उनके पास जीने के लिए दो साल का ही समय बचा था.

वो बीमार थे और बहुत दर्द में थे.

पोप के चिकित्सकों ने उनका इलाज करने की कोशिश की लेकिन वे कुछ भी नहीं कर सके.

"वो मर रहे हैं," लोगों ने एक-दूसरे से कहा.

"मुझे असीसी ले चलो," फ्रांसिस ने कहा. "मैं मृत्यु का स्वागत करता हूं."

"मैंने अपना काम किया है. काश यीशु आपको भी काम करना सिखाएं," उन्होंने कहा.

वे फ्रांसिस के अंतिम शब्द थे.

उन्हें पोर्टियुनकुला के चैपल में ले जाया गया. वहां उन्होंने एक रोटी के टुकड़े किए और वहाँ उपस्थित प्रत्येक भिक्षु को उसका एक टुकड़ा दिया.

सेंट फ्रांसिस के बारे में

प्रार्थना

यहाँ फ़्रांसिस द्वारा लिखी गई प्रार्थनाओं में से एक की कुछ पंक्तियाँ हैं, जो आज भी चर्चों में उपयोग की जाती हैं.

हे प्रभु, मुझे अपनी शांति का एक साधन बनाओ
जहां नफरत हो, वहां मुझे प्यार फैलाने दो
जहां किसी का दिल दुखी हो, वहां क्षमा करो
जहां संदेह हो, वहां विश्वास प्रदान करो
जहां निराशा हो, वहां आशा भरो
जहाँ अँधेरा हो, वहां उजाला करो
जहाँ दुःख हो, वहां सुख प्रदान करो ...

दंतकथाएं

फ्रांसिस के बारे में कई किंवदंतियां मशहूर हैं. एक के अनुसार पक्षियों के एक विशाल झुंड ने बाजार में इतना शोर मचाया कि फ्रांसिस लोगों में प्रचार नहीं कर सके. "छोटी बहनों," फ्रांसिस ने पक्षियों से कहा, "चुप रहो और सुनो," और फिर पक्षियों ने वैसा ही किया जैसा उन्हें बताया गया! दूसरे दिन देश के सभी पक्षी फ्रांसिस के पास इकट्ठे हुए. उन्होंने फ्रांसिस को आशीर्वाद दिया और वे फिर एक क्रॉस के आकार में उड़ गए.

पहला जन्म

एक क्रिसमस वाले दिन फ्रांसिस ने ग्रीकचियो के एक चर्च में एक छोटा सा पालन-दृश्य स्थापित किया. उसे देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी. उन्होंने फ्रांसिस का उपदेश भी सुना. उसके बाद, पालना-दृश्य बहुत लोकप्रिय हो गया.

दावत का दिन

कैथोलिक चर्च द्वारा हर 4 अक्टूबर वाले दिन, सेंट फ्रांसिस को याद किया जाता है.

संत फ्रांसिस के जीवन काल की कुछ महत्वपूर्ण तिथियां

1181/82 फ्रांसिस का जन्म असीसी, इटली में हुआ

1202 फ्रांसिस पेरुगिया के खिलाफ लड़े और फिर उन्हें कैदी बनाया गया

1205 फ्रांसिस ने स्पोलेटो में एक दिव्य आवाज सुनी जिसने उनसे घर वापिस जाने को कहा

1209 फ्रांसिस ने पोर्टियुनकुला में छोटे से चर्च की मरम्मत की और फिर प्रचार करना शुरू किया

1209/10 पोप ने फ्रायर्स माइनर के नए समुदाय को अपनी मंजूरी दी

1212 फ्रांसिस ने महिला भिक्षुओं का का समुदाय - सेंट क्लेयर्स स्थापित किया

1219 फ्रांसिस मिस्र गए और वहां के सुल्तान से मिले

1224 फ्रांसिस को एक दिव्य नज़ारा दिखा और फिर उनके शरीर पर घावों के निशान दिखे

1226 फ्रांसिस की शांति से मृत्यु हुई

1228 फ्रांसिस को कैथोलिक चर्च द्वारा आधिकारिक तौर पर एक संत के रूप में मान्यता प्राप्त हुई

1939 पोप पायस XII ने फ्रांसिस को, इटली के दो संरक्षक संतों में से एक घोषित किया